132 P
559
И

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 559

1308
1071

1308/10/21

19-1

891.431
Sk 23M

"Masti Ke Tarane" in Hindi
Govt of Bihar
R.no. 985 d/ 12.7.37

559

मस्ती के तराने

किसका हृदय-रक्त पी-पी कर इतना लाल बना है ?
रे गुलाब ! तू किसके बलपर इतना आज तना है ?

× × ×

समझा, समझा; वक्त बने की बात बनी रहती है।
नहीं ज्ञात ? यदि मलय वायु तो आंधी भी बहती है॥

—प्रलयंकर

संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक—

श्री यदुनन्दन शर्मा "प्रलयंकर"

दरभंगा कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

लहेरियासराय।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 559
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

मुद्रक—

श्री आनन्द विहारी प्रसाद,

विजय प्रेस, लहेरियासराय।

प्रथम वार १०००] [मूल्य एक आना मात्र

88
b

IMPERIAL RECORD
Reco. 985
12. 7. 37.
Department.

"इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद"

१

आन भारत के लिये है, प्राण भारत के लिये।
है मेरे जीवन का सब, सामान भारत के लिये॥
क्या हुआ गर जुल्म का जालिम ने खींचा है कमाँ।
शौक से खायेंगे दिलपर बाण भारत के लिये॥

२

सत्य सूर्य का अरुण घटाने अनुपम दृश्य दिखाया है।
तिमिर राशि का भेदन करके नवजीवन सरसाया है॥
विश्व-विजयिनी प्रवल क्रान्ति ने यह संदेश सुनाया है।
शीघ्र तजो दासत्व भाव को, कर्म-योग-युग आया है॥
मातृ-वन्दना करके वीरो! आगे को अब बढ़े चलो।
विजय तुम्हारी होगी निश्चय दृढ़-प्रतिज्ञ हो चले चलो॥

३

वही शाहे-शहीदाँ है, वही है रौनके आलम।
वतन पै दे के जां जो जंग के मैदाँ में सोता है॥

उसी का नाम रौशन है, उसी का नाम बाक़ी है।
कि जिसकी मौत पर दुनियें का हर इन्सान रोता है॥
ज़रा बेदार हो अब ख्वावे-गफलत से जवानो तुम।
कि जिसमें ज़ोरे बाज़ू है, वही आज़ाद होता है॥

× × × ×

यही दुनियाँ से अब इस शूरमा की रूह कहती है।
ग़रीबों को मिले रोटी तो मेरी जान सस्ती है।

—'आज़ाद'

(४)

ये जीवन धन्य मानो औ' बिता दो क़ैदखाने में।
समझकर स्वर्ग घर अपना बसा दो क़ैदखाने में॥
यहीं स्वाधीनता देवी के होंगे आपको दर्शन।
दरस के वास्ते धूनी रमा दो क़ैदखाने में॥
अगर आराम होना है, अगर आजाद होना है।
तो पहले सख्तियाँ भी जा उठा लो क़ैदखाने में॥

(५)

ज़िन्दा अगर हैं हम तो दुनियाँ को दिखा देंगे।
मशरक का सिरा लेकर मग़रव को हिला देंगे॥

हम सीन-ए-हस्ती में, अँगारा हैं अँगारा।
शोले भड़क उठेंगे, झोंके जो हवा देंगे॥
मजदूर की फितरत में, क़ुदरत ने लचक दी है।
उतना ही वह उभड़ेगा जितना की दबा देंगे॥
मजदूर के नारों से आतिश भड़क उठेगी।
बहते हुए पानी में, हम आग लगा देंगे॥
हम कौन हैं ? हम क्या हैं ? हम कुछ भी नहीं लेकिन।
आने दो भला मौक़ा मौक़े पै दिखा देंगे॥
हिन्दू हों, मुसल्मां हों, या चाहें हों कोई।
सब एक तो हो जाओ, क्या २ न दिखा देंगे॥

६

मेरी जाँ न रहे, मेरा सर न रहे,
सामाँ न रहे, न यह साज रहे।
बस हिन्द मेरा आज़ाद रहे,
माता के सिर पर ताज रहे॥
पेशानी में सोहें बाल-तिलक,
और गोद में गाँधी विराज रहे।
न यह दाग़ बदन में सफेद रहे,

न यह कोढ़ रहे न यह खाज रहे ॥
मेरे हिन्दू मुसल्माँ एक रहें,
भाई-सा रस्मे-रिवाज रहे।
मेरी पूजा न हो न तो संध्या रहे,
न ये रोज़ा रहे न निवाज़ रहे ॥

७

तुम्हारा जितना जी चाहे सितम मज़लूम पर ढालो।
कलेजा चीर डालो मेरी आँखों को निकलवालो ॥
मेरी नस-नस को छेदो और रग-रग मेरी कटवालो
यह हाज़िर है बदन मेरा इसे कोल्हू में पिस डालो ॥
मगर मैं देशसेवा का जो व्रत है वह न तोड़ूंगा।
रहूँगा हक़ पै मैं क़ायम न छोड़ा है, न छोड़ूंगा ॥

८

मेरा रंग दे बसन्ती चोला।
इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बंधन खोला ॥मेरा०॥
यहि रंग हल्दीघाटी में था खुल करके खेला।
नव भारत के नवयुग हित वीरों का यह मेला ॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

विजय-गान

१

आज उमड़ता यौवन आया, सदियों पीछे त्याग जगा;
जान पड़ गई निर्जीवों में, बुझता-सा अनुराग जगा।
ज्वालाओं से घिरे! रमाए भस्म प्रचण्ड विराग जगा;
कायरता मर मिटी, शौर्य्य का सोया हुआ सुहाग जगा॥
गूँजा घोष, निठुर रणचण्डी का—
निर्भय आह्वान सुनो!
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो!!

२

भाग चला अज्ञान-अँधेरा, पौ फूटी, निशि दूर हुई,
स्वाधीनता सूर्य हँसता है, शंका लंका चूर हुई।
आज जगा जौहर का गौहर, आत्म शक्ति भरपूर हुई;
क्या पूछो नर की, जब अबला भी सबला हो शूर हुई?
काँप रहे सिंहासन; मिटने—

वालों के वरदान सुनो !
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो !!

३

आती है यह तान दूर से बेड़ी की झंकार लिये;
खोले कान जवान सुन रहे अमर-मृत्यु-हुंकार लिये।
आगे बढ़े जूझने वाले प्राणों का उपहार लिये;
खेल रहें हैं आग, प्यार की अंगुली पर संसार लिये॥
वीर-विलोड़ित-भैरव-स्वर से—
कहते ओ नादान सुनो !
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो !!

४

आज तपस्या ही धन वसुधा का वैभव बलिदान बना,
आज आन पर मर मिटना ही यौवन का अभिमान बना।
भार अनय है, वृद्ध न्याय का शंकित हृदय जवान बना,
ऊँच-नीच, स्वामी-श्रमजीवी, छोटा बड़ा समान बना॥

पीड़ित, शोषित जीवित जाग,
मुक्त हृदय की तान सुनो !
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो !!

५

ओ, माई के लाल, मृत्यु-मुख में क्यों सीना खोल चले ?
'क्रान्ति चिर जिए' श्रीमुख से यों बार २ क्यों बोल चले?
कोटि २ कण्ठों के स्वर से अवनी-अम्बर डोल चले,
आज किधर बूढ़ी आंखों के ये चिराग अनमोल चले ?

ओ भाई, मन चले सिपाही —
एक बार दे ध्यान सुनो !
दूर करो यह दास भावना —
आज विजय का गान सुनो !!

६

देख, आत्मा अमर राष्ट्र की अपना रूप सम्भाल रही;
दीवानी हो रही जवानी हाथों हृदय उछाल रही।

नीच भावना चली क्रोध की, जो जी का जंजाल रही;
आज अहिंसा सत्य-प्रेम की पुलकित प्याली ढाल रही ॥
कौन घृणा से ठुकराता है ?-
ओ, मनुष्य -सन्तान सुनों !
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो !!

७

हाँ, कह दो, साहस से कहदो अब फिर ये निर्दोष उठें;
लाने को चिर-सत्य-स्वर्ण-युग कुछ पागल बेहोश उठे।
भ्रातृ भाव-समता-स्वतन्त्रता का घर घर से घोष उठे ;
आज देख ले यह अन्धा जग, ऐसा जीवित जोश उठे ॥
खून भरी तलवार फेंक दो—
रख दो तीर-कमान सुनों !
दूर करो यह दास भावना—
आज विजय का गान सुनो !!

—"प्रताप"

९

धीरे धीरे सर्वनाश की रौरव रचना रच जाए।
आग लगे इस अखिल विश्व में, धुंआधार फिर मच जाए।।
अत्याचार भार-भूका हो जग में फैले अमिट अशांति।
भ्रांति दूर हो उथल पुथल हो क्रान्ति २ हो भीषण क्रांति।।
धन-सत्ता की मान-महत्ता मिट्टी में मिल कर रोवे।
पश्चात्ताप करे पापों का पीड़ित पूंजीपति होवे।।
बहे रक्त की नदी भक्तगण सारे भेदों को भूलें।
नौजवान फाँसी के तख़्ते पर सादर हँस २ झूलें।।
बलिदानों की ढेर देख बलिवेदी-ज्वाला खिल जावे।
हो ऐसी हुंकार द्रोहियों के दल सारे हिल जावे।।
उड़े पताका साम्यवाद का अवनति का पथ खाली हो।
फूली फली पल्लवित इस उपवन की डाली डाली हो।।

१०

मस्ती के तराने

जब से सुना है मरने का नाम जिन्दगी है।
सर से कफ़न लपेटे क़ातिल को ढूंढ़ते हैं।।१।।

जिन्दगी भिन्दादिली को जान ऐ रौशन ।
यों तो कितने ही हुये और फ़ना होते हैं ॥२॥
जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है ।
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ॥३॥
जिसे मैं हार समझा था गला अपना सजाने को ।
वही अब नाग बन बैठा मुझी को काट खाने को ॥४॥
इन्हीं बिगड़े दिमागों में घनी खुशियों के लच्छे हैं ।
हमें पागल ही रहने दो कि हम पागल ही अच्छे हैं ॥५॥
नींद आती है कहाँ शहादत के तल्बगारों को ।
फिक्र रहती है उन्हें सितमगर ने किसे याद किया ॥६॥
ले उड़े दिल को तबीयत की रवानी वह है ।
बेपिए नशा रहे जिसमें जवानी वह है ॥७॥
दरे ज़िन्दां पर लिक्खा है किसी दीवाने ने ।
वही आज़ाद है जिसने इसे आबाद किया ॥८॥
चमने उम्र हमेशा न रहेगा शादाब ।
खुम में न बाक़ी रहेगी यह जवानी की शराब ॥९॥
हुक्म हाकिम का है, फरियाद ज़बानी रुक जाय ।
क़ौम की बढ़ती हुई गंगा की रवानी रुक ज़ाय ।

क़ौम कहती है हवा बन्द हो पानी रुक जाय।
पर यह मुमकिन नहीं कि जोशे जवानी रुक जाय॥१०॥
हाँ खबरदार जिन्होंने यह अजीयत दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है॥११॥
आज से शौके वफ़ा का यही जौहर होगा।
फ़र्श काँटों का हमें फूल का बिस्तर होगा॥१२॥
किस काम की नदी वह जिसमें नहीं रवानी।
जो जोश ही न हो तो किस काम की जवानी॥१३॥
एहसान नाखुदा का उठाए मेरी बला।
किश्ती खुदा पर छोड़ दूं लंगर को तोड़ दूं॥१४॥
इस सादगी पर कौन न मर जाए ऐ खुदा।
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं॥१५॥

इसके बाद ?

फांसी के फूल